<u>शोध – प्रारूप</u>

संताली नाट्य साहित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पीएच० डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-प्रारूप की रूपरेखा

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय

राँची विश्वविद्यालय, रौंची

वर्ष: 2023

शोध निर्देशिका

डॉ० अनिमा हाँसदा
संताली विभाग
सहायक प्राध्यापिका
गोस्सनर कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, रौंची

शोधार्थी

प्रदीप मुर्मू
एम०ए० संताली
यूजीसी नेट/जेआरएफ
स्नातकोत्तर संताली विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

भूमिका :

किसी भी भाषा, समाज एवं संस्कृति का ज्ञान उसके साहित्य से होता है। संताली भाषा संताल जनजाति की मातृभाषा है। संताली साहित्य काफी समृद्ध है। प्रारंभ में संताली भाषा को होड़ रोड़ (होड़ बोली), होड़ पा़रसी (होड़ भाषा), एवं होड़ सांवहेत् के रूप में जानी जाती थी अर्थात ये संताली बोली, संताली भाषा, एवं संताली साहित्य का ही पर्यायवाची शब्द हैं।

साहित्य समाज का दर्पण एवं सुरक्षा कवच है। साहित्य शब्द का साधारण अर्थ है - दूसरों की भलाई करना। विद्वनों ने साहित्य को ''सहितम् साहित्यिम्'' कहा है अर्थात दूसरों की भलाई या हित ही साहित्य है। इसी आधार पर संताली साहित्य संताली भाषा की भलाई या हित से है। साहित्य का संबंध समाज से अभिन्न रहता है। संताली साहित्य भी संताल समाज के आदिकाल से अभिन्न संबंध रहा है। संताली साहित्य को समझने के लिए इनके मौखिक एवं लिखित साहित्यिक विद्याओं का उल्लेख करना उचित होगा।
साहित्य के दो रूप हैं -(1) मौखिक साहित्य (2) लिखित साहित्य

संताली लिखित साहित्य का प्रारंभ उन्नीसवीं सदी के मध्य यानी सन् 1845 ई० से मानी जाती है क्योंकि जर्मिया फिलिप्स ने सन् 1845 ई० में सर्वप्रथम 'ए संताली प्राईमर' को लिखित रूप देकर प्रकाशित किये थे। इसके बाद अनेक विद्वानों ने संताली पुस्तक प्रकाशित किये जैसे- ए सिक्वल टु ए संताली प्राईमर , एन इन्ट्रोडक्सन टु दि संताली लैंवेज, वोकेबुलारी ऑफ संताली लैंवेज, ए ग्रामर ऑफ दि संताली लैंवेज इत्यादि। इस लिखित साहित्य के पूर्व संताली साहित्य मौखिक साहित्य या लोक साहित्य के रूप में संताल के आदिकाल अर्थात आज से 5000 - 6000 वर्ष पूर्व से रहा है। प्राचीन काल में होड़ या संताली भाषा की लिखित साहित्य थी या नहीं यह कहना कठिन है। संताली लोकगीत, लाकगाथा, लोक कहानी आदि इनके आदिकाल से ही रहे हैं क्योंकि इन सबों का अवशेष अभी भी देखा एवं सुना जा सकता है।

मनुष्य जीवन ही मूलतः एक नाटक है। जिसका दर्शन यह विधा कराती है। मनुष्य विश्वरूपी रंगमंच पर हर एक दिन नवीन नाटक खेलने पर मजबुर होता है। नाटक विधा मनुष्य जीवन की अभिव्यक्ति के लिए सार्थक सिद्ध होती

है। साहित्य के अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटक का प्रभाव समाजरूपी दर्शक पर अधिक तथा स्थायी होता है। साहित्य की अन्य विधाएँ पठन तथा श्राव्य तक सीमित होती है वही पर नाटक दृश्य और श्राव्य होता है। इसके कारण ही वह पाठक और समाज पर अपनी अमिट छाप छोड़ता है। मानव द्वारा अन्य इंद्रियों से लिया गया ज्ञान उतना प्रभावी नहीं होता जितना वह वैज्ञानिक दृष्टीकोण से अपनी चक्षुओं से लेता है।

नाटक 'नट' शब्द से निर्मित है जिसका आशय है - सात्विक भावों का अभिनय। नाटक दृश्य काव्य के अंतर्गत आता है। भरतमुनि ने नाटक की परिभाषा देते हुए लिखा है - "संपूर्ण संसार के भावों का अनुकीर्तन ही नाट्य है। संताली भाषा में नाटक को गायान, खेलोंड और डारमा नाम से जाना जाता है। चालीस के दशक से ही संताली नाटक लिखे एवं प्रदर्शित किए जाते रहे हैं। संताली साहित्य की प्रगति का प्रतिनिधित्व अधिक से अधिक नाटक ही कर रहें हैं।

शुरूआती दौर के संताली नाटककरों के नाटक ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित हैं। और आधुनिक नाटककरों ने सामाजिक समस्या, स्वतंत्रता संग्राम एवं प्रेम मूलक नाटकों की ओर कर रहें हैं। संताली साहित्य का प्रथम नाटक पंडित रघुनाथ मुर्मू रचित 'बिदू चाँदान' सन् 1942 ई. में प्रकाशित हुआ। संताली का दूसरा नाटक सन् 1945 ई. में प्रकाशित सोलेमान मुर्मू कृत 'कोचे काड़बा' है। सन् 1948 ई. में श्याम सुन्दर हेम्ब्रम का 'छोतोर पुती किस्कूराज' नामक नाटक प्रकाशित हुआ। सन् 1952 ई. में पं.रघुनाथ मुर्मू ने 'खेरवाड़ बीर' नामक नाटक का प्रकाशन कराया। सन् 1952 ई. में ही नारायण टुडू कृत 'आले आतू' नाटक प्रकाशित हुआ। सन् 1956 ई. में लोसो सोरेन ने 'ओलोङ' नामक नाटक का प्रकाशन कराया। सन् 1960 ई. में कालीराम सोरेन कृत 'सिदो-कान्हू मुर्मू' नाटक प्रकाशित हुआ। सन् 1971 ई. में डॉ० कृष्ण चन्द्र टुडू कृत 'जुरी ख़ातिर' नाटक प्रकाशित हुआ। सन् 1975 ई. में भैया हाँसदा द्वारा रचित 'होड़ाक् बापला' नाटक का प्रकाशन हुआ। सन् 1977 ई. में सहदेव माराण्डी कृत 'हासा आर भाषा' नाटक प्रकाशित हुआ। सन् 1980 ई. में गुलिया हेम्ब्रम रचित 'धोरोम होर' नामक नाटक प्रकाशित हुआ। साधु राम चाँद मुर्मू रचित नाटक 'संसार फेंद' सन्

1982 में प्रकाशित हुआ। बाबुलाल मुर्मू कृत 'सारजोम ढ़ारवा़क्' नाटक का प्रकाशन सन् 1983 ई. में हुआ। मदन मोहन मुर्मू द्वारा रचित 'हापड़ाम कोवाक् उयहा़र' नामक नाटक का प्रकाशन सन् 1984 ई. में प्रकाशित हुआ। संताली के नाटकों में चन्द्र नाथ मुर्मू कृत 'बाबा तिलका माँझी' (1985 ई.), भीम सेन हेम्ब्रम कृत 'सागुन गिरा' (1985 ई.), सारदा प्रसाद किस्कू कृत 'खिजला़व' (1986 ई.), भीम सेन हेम्ब्रम कृत 'सा़गुन गिरा' (1985 ई.), नस्कारी मुर्मू कृत 'हिली दा़य' (1987 ई.), कृष्ण चन्द्र टुडू कृत 'किरिंज सिंदुर' (1994 ई.), खेरवाल सोरेन कृत 'था़री दाका रे मेत् दाक्' (2000 ई.), 'चेद रे चेकायेना' (2000 ई.), डॉ० कृष्ण चन्द्र टुडू कृत 'सिरजोन' (2005 ई.), जामादार किस्कु कृत 'माला मुदा़म' (2010 ई.) आदि प्रमुख हैं। इसी प्रकार संताली नाटककारों ने अनेक नाटकों की रचना करके संताली साहित्य को समृद्ध किये और कर रहे हैं।

नाटक साहित्य में न केवल मनुष्य के मन को छू लेने की अद्भुत शक्ति होती है, बल्कि आत्मचेतना का विस्तार भी होता है। संताली नाटक पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि कई नाटक लिखे गए हैं और लिखे जा रहे हैं। यद्यपि, उस संख्या में नहीं जिसकी अपेक्षा रखी जाती है, फिर भी संताल लेखकों के सफल प्रयासों से संताली साहित्य जगत में संताली नाटकों ने अपना एक अलग स्थान निर्मित किया है। आज के संताली साहित्य का जो स्वरूप दृष्टिगोचर होता है, वह लिखित रूप में है जिसका आधार संतालों का पुरखौती साहित्य रहा है। इस शोध में संताली नाटकों के आधार पर उनके चिंतन के विभिन्न पक्षों को जानने और समझने का प्रयास किया जायेगा।

प्रेरणा :

मेरा जन्म झारखण्ड राज्य के जामताड़ा जिले के नारायणपुर प्रखण्ड के ग्राम पाल्टा में हुआ है। जामताड़ा जिला संताल परगना प्रमण्डल के अंतर्गत आती है, जो संताली भाषी बहुल क्षेत्र है। जहाँ मेरा बचपन गुजरा है और मेरा परवरिश भी इसी माहौल में हुआ है। जिस कारण मातृभाषा संताली के प्रति लगाव रहा है। यही कारण रहा कि स्नातकोत्तर संताली में की है। पढ़ाई के दौरान संताली भाषा और साहित्य को जानने का जिज्ञासा बढ़ता गया। स्नातकोत्तर की पढ़ाई के दौरान जनजातीय एंव क्षेत्रीय भाषा विभाग के शोधार्थियों के शोध कार्यों को देखा, जिससे मुझे इस क्षेत्र में शोध करने की इच्छा जगी और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि संताली भाषा एवं साहित्य की समृद्धि में योगदान दूँ । अध्ययन काल के दौरान संताली नाटकों को पढ़ा और जाना कि संतालों के जीवन के हर एक पहलुओं को इसे पढ़कर समझा जा सकता है। इस विषय पर संताली विभाग के प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ० मेरी एस० सोरेंग से चर्चा की। उन्होंने भी " संताली नाट्य साहित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन " विषय पर शोध कार्य के लिए प्रेरित किया। साथ ही विभाग के सहायक प्रध्यापकों, शोधार्थियों, परिवार के सदस्यों, मित्रों, एवं शुभ चिंतको ने भी इस शोध के लिए मुझे प्रेरित किया।

शोध विषय का औचित्य :

किसी भी शोध कार्य का महत्व तब तक नहीं होती है जब तक कि उसकी उपयोगिता समाज, प्रदेश एवं देश के लिए ना हो।

परिकल्पना :

परिकल्पना प्रत्येक अनुसंधान का आधार होता है। परिकल्पना का तात्पर्य पूर्व चिंतन से है। अर्थात् किसी समस्या के हल के बारे में पहले से अनुमान लगाना ही परिकल्पना होती है। संताली नाटकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन द्वारा उनके चिंतन के विभिन्न पक्षों को जानने और समझने का प्रयास किया जायेगा ।

शोध का उद्देश्य :

1. संताली नाटकों में चित्रित जीवन के विभिन्न परिदृश्य को प्रकट करना।
2. संताली नाटकों में वर्णित सामाजिक पहलुओं पर प्रकाश डालना।
3. संताली नाटकों में चित्रित सांस्कृतिक पहलुओं पर प्रकाश डालना।
4. संताली नाटकों में चित्रित धार्मिक पहलुओं पर प्रकाश डालना।
5. संताली नाटकों में चित्रित आर्थिक पक्ष पर प्रकाश डालना।
6. संताली नाटकों में चित्रित वर्तमान उपभोक्ता संस्कृति को स्पष्ट करना।
7. संताली नाटकों में छूपे विद्यमान सामाजिक संदेशों को समाज के सामने लाना।

शोध विधि :

निम्नलिखित विधियों के द्वारा शोध कार्य किया जा सकता है

1. विश्लेषणात्मक विधि
2. वर्णनात्मक विधि
3. तुलनात्मक विधि
4. अवलोकन विधि
5. साक्षात्कार विधि
6. प्रश्नावली विधि

उपकरण :

निम्नलिखित सामग्री शोध के लिए उपयोग किये जा सकते हैं-

1. शोध से संबंधित पुस्तकें, प्रकाशित रचनाएँ, संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें।
2. पत्र-पत्रिकाएँ
3. टेप रिकॉडर
4. कैमरा
5. कंप्यूटर
6. इंटरनेट
7. मोबाईल
8. नक्शा, पेपर इत्यादि

प्रस्तुत विषय से संबंधित शोध कार्य :

प्रस्तावित शोध विषय से संबंधित शोध कार्य नही किया गया है। विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में और शोध गंगा जैसे वेब साइट्स जाँचने के बाद ज्ञात हुआ कि शोध विषय "संताली नाट्य साहित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" पर अब तक कोई कार्य नहीं किया गया है। अतः यह शोध कार्य नवीनतम एवं मौलिक होगा।

<u>प्रस्तावित रूपरेखा</u>

शोध विषय: संताली नाट्य साहित्य: एक विश्लेषनात्मक अध्ययन

- प्रस्तावना
- शोध विषय की प्रेरणा
- उद्देश्य
- शोध का परिसीमन
- शोध विधि
- प्रस्तुत विषय से संबंधित कार्य

1. प्रथम अध्याय: नाटक का सैद्धांतिक परिचय

    I. नाटक शब्द की उत्पत्ति, अर्थ एवं अवधारणा

    II. नाटक की परिभाषा

    III. नाटक के प्रकार एवं तत्व

2. द्वितीय अध्याय: संताली नाटक का परिचय, उद्भव एवं विकास

    I. उद्भव

    II. विकास

    III. विशेषता

    IV. महत्व

    V. प्रमुख संताली नाटककारों का परिचय

3. तृतीय अध्याय: संताली नाटकों का वस्तुपरक अध्ययन

I. पारिवारिक अवधारणा
II. सामाजिक अवधारणा
III. सांस्कृतिक अवधारणा
IV. राजनीतिक अवधारणा
V. धार्मिक अवधारणा
VI. आर्थिक अवधारणा

4. चतुर्थ अध्याय: संताली नाटकों की पात्र एवं संवाद योजना
   I. पात्र योजना
   II. संवाद योजना

5. पंचम अध्याय: संताली नाटकों का शिल्प विधान
   I. भाषा
   II. शैली
   III. मुहावरें
   IV. बोलचाल के शब्द
   V. लोकोक्तियाँ
   VI. रस

6. षष्ठ अध्याय: संताली नाटकों में रंगमंचीयता

I. रंगमंच

II. संताली नाटक का रंगमंच

III. अन्य रंगमंच

उपसंहार
परिशिष्ट
आधार ग्रंथों की सूची
संदर्भ ग्रंथों की सूची
पत्र-पत्रिकाएँ

नोट: प्रस्तावित प्रस्तुत शोध -प्रारूप की रूपरेखा में आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

शोध निर्देशिका | शोधार्थी

डॉ० अनिमा हाँसदा
सहायक प्राध्यापिका

प्रदीप मुर्मू
एम०ए० संताली

संताली विभाग
गोस्सनर कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

यू.जी.सी.नेट/जेआरएफ
स्नातकोत्तर संताली विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

<u>आधार ग्रंथों की सूची :-</u>

<u>संताली पुस्तकें</u>

क्र. सं.	लेखक/लेखिका	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	वर्ष
01.	हाँसदा,डॉ०अनिमा	संताली साहित्य में सांस्कृतिक चेतना	जेवियर पब्लिकेशन, राँची	2017
02.	हाँसदा,डॉ०अनिमा	जानाम दिसोम	जेवियरपब्लिकेशन, राँची	2017
03.	हाँसदा,डॉ०अनिमा	मातकोम बुटा़ आ़रिचा़ली	जेवियर पब्लिकेशन, राँची	2017
04.	हाँसदा,डॉ०अनिमा	संताली भाषा एवं साहित्य के विकास में मिशनरियों का योगदान	जेवियर पब्लिकेशन, राँची	2017
05.	किस्कु, जमादार	माला मुंदा़म	मार्शल बांबेर, झारग्राम,पं.बंगाल	2010
06.	हाँसदा,ठाकुर मानिंद्र	बादोली कोंयडा	बास्क पब्लिकेशन, कोलकाता,पं.बंगाल	2015
07.	टुडू,डॉ०कृष्ण चन्द्र	जुरी खा़तिर	चांपाबोती टुडू, बरियातु,राँची	2013

08.टुडू,डॉ०कृष्ण चन्द्र	किरि´ सिंदुर	अदिबासी कल्याण आयुक्त जनजातीय भाषा अकादमी, राँची	1994
09.मुर्मू,पं.रघुनाथ	बिदू चाँदान	मार्शल बांबेर पब्लिकेशन, झारग्राम,पं.बंगाल	2020
10.मुर्म,पं.रघुनाथ	दाड़े गे धोन	कनईलाल टुडू, झारग्राम,पं.बंगाल	2008
11.मुर्मू,पं.रघुनाथ	खेरवाल बीर	मार्शल बांबेर पब्लिकेशन, झारग्राम,पं.बंगाल	2011
12.मुर्मू,बाबुलाल	सारजोम ढ़ारवाक्	संताल पहाड़िया सेवा मंडल,देवघर	1983
13.सोरेन,भोगला	मान दिसोम पोरान पोरायनी	झारखण्ड झारोखा, राँची	2018
14.सोरेन,भोगला	ऱाही रांवांक् काना	दबांकी प्रेस, करनडीह, जमशेदपुर,झारखण्ड	
15.टुडू,रबिलाल	बीर बिरसा	हीरामोनी टुडू- अनल टुडू बर्दमान,पं.बंगाल	2013
16.मुर्मू,साधु रामचाँद	संसार फेंद	मार्शल आफसेट प्रेस, मार्शल बांबेर,झारग्राम	2019

<u>हिन्दी पुस्तकें</u>

क्र. सं.	लेखक/लेखिका	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	वर्ष

01.साहनी,दीनानाथ	नाट्य-शास्त्र और रंगमंच	प्रभात प्रकाशन,	2011
02.परिहार,नीतू	हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच	हिमांशु पब्लिकेशन,	2015
03.द्विवेदी,डॉ०पारसनाथ	नाट्यशास्त्र का इतिहास	चैखम्बा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी	2017
04.दास,ब्रजरत्न	हिन्दी नाट्य साहित्य	हिंदी-साहित्य कुटीर, बनारस	2001
05.शास्त्री,बाबुलाल शुक्ल	श्रीभरतमुनिप्रणीत हिन्दी नाट्यशास्त्र (सचित्र)	चैखम्बा प्रकाशन,	2015
06.मुखर्जी,डॉ०रानू	बांग्ला नाट्य साहित्य एवं रंगमंच	नमन प्रकाशन, नई दिल्ली-110002	2022
07.अरोड़ा,हरीश	नाटक और रंगमंच के विविध आयाम	साहित्य संचय	2016

<u>सहायक ग्रंथों की सूची:-</u>

<u>संताली पुस्तकें</u>

क्र. सं. लेखक/लेखिका	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	वर्ष
01.सोरेन,ईश्वर	ञातार्ड. ञाचार	बांॅगी आसड़ा,	2016

		पु.सिंहभूम,झारखण्ड	
02.सारेन,खेरवाल	थ़ारी दाका रे मेत् दाक्	एआईएसडब्लुए, झारग्राम,डब्लु.बी.	2000
03.सारेन,खेरवाल	चेत् रे चेकायेना	एआईएसडब्लुए, झारग्राम,डब्लु.बी.	1985
04.सारेन,खेरवाल	इञ खेरवाल इञ मेमेन काना	बिनोद माण्डी, पं.मेदनीपुर,पं.बंगाल	2008
05.सारेन,खेरवाल	ओ़खिर दिसा़ कातेक्	सनत सिरजन सारेन सागेन सिरजन सारेन, झारग्राम,पं.बंगाल	2012
06.हाँसदा,गंगाधर	छिल बिंधा़	हाँस हाँसली पब्लिकेशन मयुरभंज,आड़िशा	2019
07.मुर्मू,चन्द्रनाथ	बाबा तिलका मांझी	दि पेज मेकर्स, दुर्गापुर,डब्लु.बी.	1985
08.किस्कु,जमादार	माला मुंदा़म		2010
09.टुडू,डॉ०कृष्ण चन्द्र	संताली सांवहेत् रेयाक् ओमोनोम आर हारा	संताली साहित्य पूर्वी सिंहभूम, झारखण्ड	2012
10.हेम्ब्रोम,परिमल	आखड़ा	संथाली साहित्य परिषद,पं.बंगाल	2012
11.हेम्ब्रोम,सुरजानन्द	भुरकाक् इपिल	साहित्य अकादमी, दिल्ली	2015
12.मुर्मू,सोलेमान	कोचे काड़बा	सारजोम प्रिंटर्स,सारगा, बांकुड़ा,पं.बंगाल	

पत्र-पत्रिकाएँ

क्र. सं.	पत्र-पत्रिकाओं का नाम	प्रकाशक	वर्ष
01.	तोपोल	लक्ष्मण चन्द्रा सारेन	2003
02.	दिशोम खोबोर	दिकूमुनी सोरेन	2008
03.	पांजा	श्याम चरण टुडू	2008
04.	सेताक्	श्याम चरण टुडू	2008